>

Title: Need to include Braj Bhasha in the Eighth schedule to the Constitution.

श्री रतन सिंह (भरतपुर): ब्रज भाषा पूरे देश भर की ऐसी भाषा है जिसमें काफी मिठास हे और इसे प्रेममयी एवं रसीली भाषा के रूप में जाना जाता हे और इस भाषा में शब्दों में कई आकर्षण देखने को मिलते हैं। संक्षेप में ब्रज भाषा के बिना हिंदी की कल्पना करना असंभव है। भगवान श्री कृष्ण के अधिकांश ग्रंथ एवं काव्य इस ब्रज भाषा में है। यह भाषा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा एवं दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रों में करोड़ों भारतवासियों द्वारा बोली जाती है। आठवीं अनुसूची में इस भाषा को अभी तक शामिल नहीं किया गया है जिसके कारण ब्रज भाषा क्षेत्रों मं रहने वाले लोगों में काफी असंतोष है। भक्ति काव्य अधिकांश ब्रज भाषा में है और महाभारत ग्रंथ का मूल उत्थान ब्रज भाषा के द्वारा हुआ है। अमीर खुसरो, रसखान एवं सूरदास के ग्रंथ एवं अन्य महाकाव्य भी ब्रज भाषा में है और हिंदी के प्रयोग में ब्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाये तो हिंदी को और अधिक कारगर ढंग से लोकप्रिय बनाया जा सकता है। अभी तक ब्रज भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया है जबकि संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने के लिए जो मापदंड है, ब्रज भाषा इन सभी औपचारिकताओं को पूरा करती है।

सरकार से अनुरोध है कि भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में ब्रज भाषा को शामिल किया जाये।